International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 19-10-2022, Accepted: 05-11-2022, Published: 21-11-2022
Volume 8, Issue 6, 2022, Page No. 35-36

सूर्यबाला के कथा साहित्य में बेरोजगार युवाओं की समस्याएं

Sonali Ghatak
शोधर्थिनी, आंध्रा विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश, भारत

सारांश
बेरोजगारी समाज पर कलंक है, जिससे आर्थिक स्थिति बिगड़ती है। इसके कारण व्यक्ति के जीवन में असन्तोष तथा अस्थिरता व्याप्त रहती है। शिक्षा के विकास के साथ मध्यवर्गीय शिक्षित युवा वर्ग बेरोजगारी के नागपाश में जकड़ा सर्वाधिक यंत्रणाएं भोग रहा है। युवा वर्ग के सम्बन्ध में मंजुलता छिल्लर का मत है, ''आज युवकों में निराशा, असन्तोष एवं तनाव का मुख्य कारण उनके जीवन में व्याप्त आर्थिक असुरक्षा है। युवा शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात कोई नौकरी करना चाहते हैं, अपने को किसी व्यवसाय में लगाना चाहते हैं परन्तु उन्हें ऐसी कोई सुविधा साधारणतः मिल नहीं पाती है। परिणामस्वरूप उनमें घोर निराशा दिखायी पड़ती है।'' इस प्रकार शिक्षित होते हुए भी युवा वर्ग को अपनी योग्यतानुसार काम नहीं मिलता। सूर्यबाला ने अपने कथा साहित्य में रिश्वतखोरी, अर्थाभाव तथा गरीबी के कारण युवाओं में व्याप्त बेरोजगारी को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

मूल शब्दः अर्थाभाव, बेरोजगार युवा, मध्यवर्गीय परिवार, सहानुभूति

सूर्यबाला ने 'अग्निपंखी' उपन्यास में जयशंकर के माध्यम से आज के परिवेश में कुठाग्रस्त जीवन व्यतीत करते उस बेरोजगार युवक को अभिव्यक्ति प्रदान की है, जिनके लिए जीवन जीना नहीं सिर्फ ढ़ोना है। जयशंकर लुकमानगंज गांव का रहने वाला युवक है, जो एक संयुक्त मध्यवर्गीय परिवार में रहता है। बचपन में ही पिता गुजर जाते हैं और उसे अपनी विधवा माँ के साथ ताया और चाचा की दया में रहना पड़ता है। जयशंकर ने नौकरी के लिए कई फार्म भरे, कुछ परीक्षाएं भी पास की लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। हर कोई उसे रिश्वत की सलाह देता। अंततः उसने नौकरी पाने के लिए रिश्वत हेतु अपनी माँ का चाँदी का हार भी बेच दिया, फिर भी नौकरी नहीं मिल पायी। जयशंकर कहता है, "एक अस्पताल की स्टोरकीपरी तो पाँच–सात हजार पे पक्की करके आया भी था; लेकिन बीच में जाने कब दूसरा आदमी पंद्रह दे के अपनी सही करवा गया। स्टोरकीपरी जो गई सो तो गई ही, उससे ज्यादा अफसोस माँ की सात लड़ की चाँदी की करधनी बिक जाने का हुआ था। जाने कैसे भाँपा था माँ ने और संदूकची की तली से निकाल के खुद ही सकलनाथ गुमाश्ते की भौजाई के पास बेच आई थी।'' इस प्रकार इंटरव्यू में अपने से कम क्षमता और योग्यता वाले उम्मीदवार की पैसे अथवा सिफारिश के आधार पर नियुक्ति हो जाने से युवक भीतर ही भीतर टूट जाता है।

आज मध्यवर्ग का प्रत्येक युवक पढ–लिख कर नौकरी करने का स्वप्न देखता है परन्तु अर्थाभाव के कारण जब ये स्वप्न चूर–चूर हो जाते हैं, तो बड़ी निराशा होती है। कभी–कभी तो अपमान भी सहना पड़ता है। 'कंगाल' कहानी का नायक विनय एमव्एव्म् पास है लेकिन बेरोजगार है। वह बड़ी मेहनत करके परीक्षाएं देता है फिर भी उसे कहीं भी नौकरी नहीं मिलती है, जिसके कारण परिवार में उसके प्रति हमदर्दी बढ़ जाती है। बहन रिक्शे के पैसे बचाकर स्वैटर बना देती है, भाई इंटरव्यू देने जाते समय बीस रुपए थमा देता है। घरवालों की इस हमदर्दी और सहानुभूति ने विनय को अंदर तक झिंझोड़ कर रख दिया है। विनय अपनी लाचारी व्यक्त करता हुआ कहता है, ''यह बेरोजगारी क्या, बस आर्थिक तंगहाली है? नहीं, शायद एक ऐसी लाचारी, जिसने मेरे समूचे व्यक्तित्व का रस चूसकर मेरी पूरी–की–पूरी मानसिकता को पंगु बना बीच रास्ते में फंके दिया है। मैं अब 'मैं' रह ही कहाँ गया।' इस प्रकार पढ़े–लिखे होकर भी छोटी–बड़ी चीजों के लिए परिवार वालों पर मोहताज बनना व्यक्ति को केवल अर्थ से नहीं बल्कि अस्मिता से भी कंगाल बना देती है। अंत में विनय चुपके से परीक्षा देता है और उस परीक्षा में बहुत अच्छे अंकों से पास भी होता है। जब उसका इंटरव्यू होता है तो वह अपने परिवार को बता नहीं पाता और उसे अपनी माँ के साथ गांव जाना पड़ता है। गांव से लौटकर आने पर उसके बाबूजी पूछते हैं, ''अरे बिनै, तुमने कोई इम्तहान दिया था? ये देखो, उसकी मार्क्सशीट आई हैं। नंबर तो बहुत अच्छे हैं। इंटरव्यू कब है इसका?'' इस प्रकार अपने से नितांत संत्रस्त इतना भी नहीं कह पाता है कि इसका इंटरव्यू बीत चुका है।

अर्थाभाव ने शिक्षित पीढ़ी को बेकार बनाकर उनके मुंह बंद कर दिए हैं। सूर्यबाला की कहानी 'भुक्खड़ की औलाद' का नायक बैजनाथ एक शिक्षित बेरोजगार युवक है। बेकारी के कारण वह बिट्टो की माँ के घर नौकरी की तलाश में आता है क्योंकि उसके रोजी–रोटी का कहीं कोई ठिकाना नहीं होता है। माँ अपनी बेटी बिट्टो से कहती है, ''अरे उसकी हुलिया पर न जा, देखने में न है पूरा भुच्चड़ सा, पर जानती क्या है... है हाईस्कूल पास.... पहले जमाने के हाईस्कूल पास हाकिम–हुक्काम हुआ करते थे और अब के? हालत देखो जरा....।'' इस प्रकार पढ़ा–लिखा होकर भी युवकों को जहाँ एक तरफ आर्थिक समस्या हताश कर रही है, वहीं दूसरी तरफ बेरोजगारी की विकट समस्या परेशान कर रही है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सूर्यबाला ने अपने कथा साहित्य में महत्त्वाकांक्षी शिक्षित युवा पीढ़ी में बढ़ती बेरोजगारी तथा पूंजीपति वर्ग की स्वार्थपूर्ण नीतियों के कारण समाज में व्याप्त बेरोजगारी का स्पष्ट चित्रांकन किया है। 'अग्निपंखी' उपन्यास में जयशंकर के लिए जीवन जीना नहीं सिर्फ ढोना है क्योंकि नौकरी के लिए हर कोई उसे रिश्वत की सलाह देता और इंटरव्यू में पैसे अथवा सिफारिश के आधार पर नियुक्ति होती है। 'कंगाल' कहानी में विनय एम. ए. पास बेरोजगारी है। पढ़े–लिखे होकर भी छोटी–बड़ी चीजों के लिए परिवार वालों पर मोहताज बनना विनय को केवल अर्थ से ही नहीं बल्कि अस्मिता से भी कंगाल बना देती है। 'भुक्खड़ की औलाद' कहानी में बैजनाथ बेकारी के कारण अपना घर छोड़कर शहर में रोजी–रोटी की तलाश में आता है क्योंकि वहाँ उसकी रोजी–रोटी का कोई ठिकाना नहीं होता है। इस प्रकार युवा–वर्ग को एक तरफ

बेरोजगारी की विकट समस्या परेशान करती है, तो दूसरी तरफ अर्थाभाव की समस्या हताश कर रही है।

संदर्भ सूची

1. मंजुलता छिल्लर, भारतीय सामाजिक समस्याएं, पृष्ठ सं 139
2. सूर्यबाला, अग्निपंखी, पृष्ठ सं 20
3. सूर्यबाला, दिशाहीन, पृष्ठ सं 76
4. सूर्यबाला, मुंड़ेर पर, पृष्ठ सं 70